RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 सितम्बर 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, सितम्बर 2022

चकमक

मूल्य ₹50

मेरा पन्ना विशेषांक

नवम्बर-दिसम्बर 2022

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर अंक विशेषांक होता है। इस बार विशेषांक के साथ यह नवम्बर और दिसम्बर माह का संयुक्त अंक भी होगा। यानी इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे। तो इस अंक के लिए तुम्हें खास तौर से अपनी रचनाएँ भेजनी हैं।

अपनी खुद की रची कहानी, कविताओं, किस्सों, लेखों, चित्रों, पेंटिंग व कॉमिक के साथ-साथ तुम चुटकुले, माथापच्ची के लिए पहेलियाँ व सवाल वगैरह भी भेज सकते हो। इनके अलावा तुम दिए गए किसी भी विषय पर अपनी रचना गढ़ सकते हो।

किस्से-कहानियों-कविताओं या चित्र अथवा कॉमिक के रूप में तुम्हारी रचनाओं के लिए कुछ विषय ये रहे

- घर-आँगन, बगीचे, रास्ते, जंगल के इर्द-गिर्द या और कहीं भी किसी जंगली जानवर से तुम्हारी मुलाकात का किस्सा
- किसी जगह घूमने गए हो तो उस यात्रा के तुम्हारे अनुभव
- हाल ही में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स, अपने पसन्दीदा खेल या अपने गली-मोहल्ले में खेले जाने वाले किसी खेल के बारे में
- कोई ऐसी चीज़ या घटना जिसे तुमने रहस्यमयी पाया हो और उसके रहस्य का पर्दाफाश किया हो
- अपने सपनों के घर का चित्र बनाओ।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पता ज़रूर लिखना। तुम्हारी रचनाएँ हमारे पास 25 सितम्बर तक पहुँच जाएँ तो बहुत बढ़िया रहेगा।

रचनाएँ तुम 9753011077 पर व्हॉट्सऐप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

अंक 432 • सितम्बर 2022
चकमक

इस बार

नीली जेब - सबा 4
कला के आयाम - शेफाली जैन 6
महिला गणितज्ञ - अन्तिम भाग - आलोका कान्हेरे 10
भूलभुलैया 13
जब पल्लव चाचा हीरो बने - लाल्टू 14
छींद रस - बारसे रोशन 20
अन्तर ढूँढो 22
पहाड़ के बुलाने पर, सड़क की... - निधि सक्सेना 23
अफ़्रीकी चीते भारत में - रोहन चक्रवर्ती 27
क्यों-क्यों 28
बच्चों में लॉकडाउन मायोपिया 31
मेरा पन्ना 32
माथापच्ची 38
चित्रपहेली 40
तुम भी जानो 43
नदी गुम गई - वीरेन्द्र दुबे 44

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण: पौला रेगो
जोसैफ्स ड्रीम, 1990

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

नीली जेब

सबा

चित्र: शुभश्री माथुर

ज़ोया ने घर में ही रहकर पुराने कपड़ों को सी-सीकर कपड़े सिलना सीखा। फिर ज़ोया ने अपने लिए एक गुलाबी रंग की कुर्ती सिली। कुर्ती के दामन में फिरोज़ी रंग की एक जेब लगाई। कुर्ती तैयार करके सबसे पहले ज़ोया ने अपनी बहनों को दिखाई। छोटी बहन ने कहा, "ये तो बहुत खूबसूरत है।"

घर में से ही किसी ने कहा "बस ये जेब अजीब लग रही है।"

ज़ोया कहाँ सुनने वाली थी। वह बस अपनी ही धुन में मस्त रहने वाली है। अपने लिए ये कुर्ती बनाने का आइडिया भी तो ज़ोया का ही था। ज़ोया कह रही थी कि वो तो अपनी आस्तीन पर भी एक जेब लगाना चाहती थी।

ज़ोया ने अलविदा जुमे के दिन खुशी-खुशी अपनी बनाई कुर्ती पहनी। वह बाहर आँगन में खड़ी अपने कबूतरों को दाना चुगा रही थी। तभी घर के सामने से रिश्ते के दूल्हा भाई गुज़रे। वे बोले, "अरे! ये तो

आदमियों जैसा कुर्ता पहना है तुमने। और यहाँ तो जेब आदमी भी नहीं लगवाते हैं।"

ज़ोया बोली, "कुर्ता नहीं है। कुर्ती है मेरी। मैं जहाँ चाहे जेब लगाऊँ।"

और फिर ज़ोया अपनी प्यारी मुस्कान के साथ मुस्कराते हुए बोली, "आप भी लगवा लीजिए आगे एक जेब।"

दूल्हा भाई उस दिन से जब भी ज़ोया को देखते उसे 'जेब वाली लड़की' कहकर चिढ़ाते। वो अपनी चेंग से अब चिढ़ती नहीं है बस इठलाती-सी मुस्कान छोड़ देती। हाँ लेकिन अपनी दोस्तों को हर बार बताती है वो मेरी कुर्ती पर फिर से बोले।

जब कोई पहली बार ज़ोया को वो कुर्ती पहने देखता तो कहता, "अरे! ये जेब गलत लग गई है क्या? ऊपर क्यों लगाई है?"

ज़ोया हर बार मुस्कान के साथ कहती, "नहीं। ये मैंने अपनी मर्ज़ी से लगाई है।"

मेरी जेब की डिज़ाइन है। जिस दिन भी ज़ोया वो जेब वाली कुर्ती पहनती है, वो उसमें घर की चाबी या फिर मोबाइल रख लेती है। वो ज़ोया के सबसे पसन्दीदा कपड़ों में से एक है।

खुशी-खुशी ज़ोया ने अलविदा जुमे के दिन अपनी बनाई कुर्ती पहनी और वह बाहर आँगन में खड़ी अपने कबूतरों को दाना चुगा रही थी। तभी घर के सामने से रिश्ते के दूल्हा भाई गुज़रे वे बोले, "अरे ये तो आदमियों जैसा कुर्ता पहना है तुमने। और यहाँ तो जेब आदमी भी नहीं लगवाते हैं।"

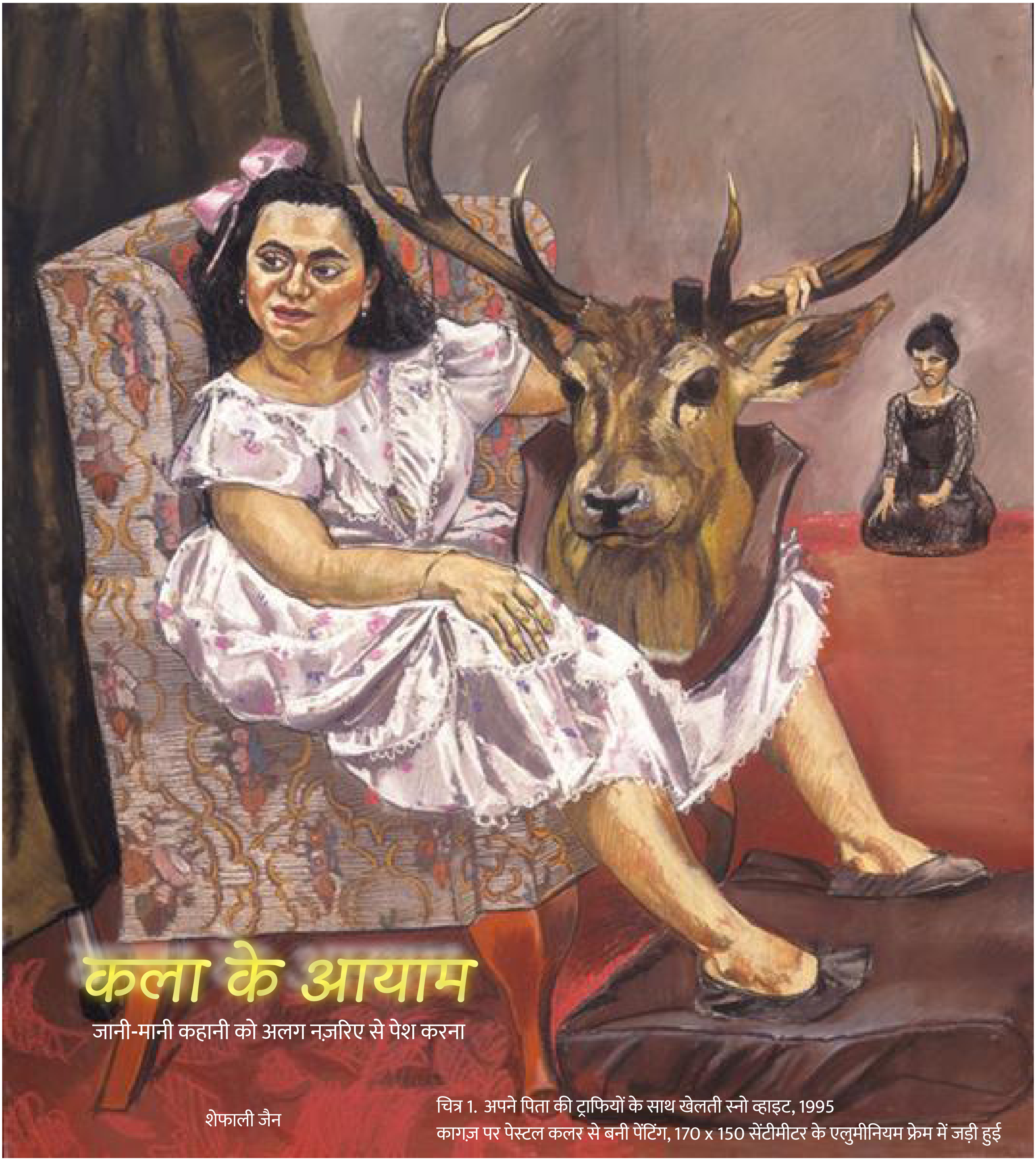

कला के आयाम

जानी-मानी कहानी को अलग नज़रिए से पेश करना

शेफाली जैन

चित्र 1. अपने पिता की ट्राफियों के साथ खेलती स्नो व्हाइट, 1995
कागज़ पर पेस्टल कलर से बनी पेंटिंग, 170 x 150 सेंटीमीटर के एलुमीनियम फ्रेम में जड़ी हुई

कहानियाँ सुनना लगभग हम सबको अच्छा लगता है। बचपन से ही हम दादी-नानी, दाई, दीदी से कहानियाँ सुनते आए हैं। हम किताबों में भी बहुत कहानियाँ पढ़ते आए हैं। पर पता नहीं क्यों एक उम्र के बाद कहानियाँ हमारी किताबों से गायब होने लगती हैं। या फिर वे केवल साहित्य जैसे विषय में पढ़ाई जाती हैं। पर कला का कहानियों से काफी लम्बा और गहरा ताल्लुक रहा है।

कला और कहानियों का नाता

बहुत सारे पेंटिंग, म्यूरल और रिलीफ वर्क का विषय कहानियाँ ही रही हैं। अजन्ता के म्यूरल्स में जातक कथाएँ उकेरी हुई हैं, तो मुगल मिनिएचर पेंटिंग्स में राजपाट और हम्ज़ानामा जैसी रोमांचक कहानियाँ चित्रित हैं। हम्पी के मन्दिरों में शिव-पार्वती की कहानियाँ मढ़ी हुई हैं। कहानियाँ समकालीन कला में भी हैं। जैसे आम लोगों की कहानियाँ सुधीर पटवर्धन की कला में, रोमांच और साहस की कहानियाँ सुपरहीरो कॉमिक्स में या फिर लोककथाएँ जापानी एनीमे में।

तो ज़ाहिर है कहानी का कला से बहुत करीबी नाता है। पर इन सब अलग-अलग तरह की कहानियों में एक खास तरह की कहानी है जिसे ऐडैप्टेशन (रूपान्तर) कहते हैं। यानी किसी जानी-मानी कहानी को एक अलग नज़रिए से दोबारा पेश करना। इस तरह का ऐडैप्टेशन पेंटिंग में भी हुआ है। ऐडैप्टेशन का इस्तेमाल करने वाले कलाकारों में से मेरी पसन्दीदा कलाकार हैं – पौला रेगो। तो चलो आज रेगो के एक चित्र ऐडैप्टेशन के बारे में साथ में सोचें।

स्नो व्हाइट की कहानी और रेगो का ऐडैप्टेशन

चित्र 1 का शीर्षक है – 'स्नो व्हाइट विथ हर फादर्स ट्रॉफीज़'। यानी स्नो व्हाइट अपने पिता की ट्रॉफियों के साथ। स्नो व्हाइट की कहानी तो तुमने सुनी होगी। स्नो व्हाइट अपने पिता और सौतेली माँ के साथ रहती थी। सौतेली माँ के पास एक जादुई शीशा था। जब भी वह उससे पूछती कि दुनिया में कौन सबसे सुन्दर है, तो शीशा स्नो व्हाइट का ही नाम लेता। इस पर गुस्सा होकर स्नो व्हाइट की सौतेली माँ उसे जंगल में मरने के लिए छोड़ आती है। पर वापस आकर जब शीशा फिर भी स्नो व्हाइट का नाम लेता है तो उसे पता चलता है कि स्नो व्हाइट अब भी ज़िन्दा है।

स्नो व्हाइट जंगल में सात नए दोस्तों के साथ रहने लगती है। सौतेली माँ भेस बदलकर वहाँ पहुँचती है और स्नो व्हाइट को एक ज़हरीला सेब खिला देती है। इससे स्नो व्हाइट सदा के लिए एक गहरी नींद में सो जाती है। अन्त में एक राजकुमार आकर उसे चूमकर उसकी नींद से वापस बाहर ले आता है।

तुमने इस कहानी को कई बार सुना या देखा होगा। कभी किसी किताब में या फिर डिज़्नी कार्टून पर। डिज़्नी की स्नो व्हाइट बिलकुल नाज़ुक, गोरी और बेचारी-सी लड़की है। उसकी सौतेली माँ आसानी-से उसे ठग लेती है और ज़हरीला सेब खिलाकर सुला देती है। और जब तक राजकुमार आकर उसे बचा नहीं लेता, तब तक वह यूँही बेसहारा सोई रहती है।

पर पौला रेगो के ऐडैप्टेशन में स्नो व्हाइट बिलकुल अलग है। रेगो की पेंटिंग में जो स्नो व्हाइट है वह डिज़्नी प्रिंसेस की तरह नाज़ुक नहीं, बल्कि काफी तगड़े शरीर वाली है। वह एक सोफे पर धड़ल्ले से पैर फैलाए बैठी है। उसे हम दर्शकों में कोई दिलचस्पी नहीं। वह कहीं और ही देख रही है। जैसे हमें कह रही हो कि हम उसे घूरना बन्द करें और अपना रास्ता नापें!! उसकी गोद में एक हिरण का सिर है। बिलकुल वैसा जैसा हम पुराने महलों में दीवार पर टँगा देखते हैं – किसी राजा के शिकार का भूसे से भरा पुतला। स्नो व्हाइट के चेहरे पर सन्तुष्टि और सफलता झलक रहे हैं। पेंटिंग का शीर्षक बताता है कि यह सिर उसके पिता की ट्रॉफियों (किसी भी खेल जैसे शिकार में विजय पाने का कोई चिह्न) में से एक है, पर स्नो व्हाइट को देखकर ऐसा लग रहा है मानो वह खुद शिकार करके बस अभी उसे यहाँ लाई है। पीछे दीवार से सटकर एक औरत बैठी है। क्या वह स्नो व्हाइट की सौतेली माँ है? वह काफी नाखुश लग रही है और काफी छोटी-सी और गर्राई हुई भी।

चित्र 2. उत्तरी लंदन, कैमडेन के अपने स्टूडियो में पौला रेगो, © एंटोनियो ऑल्मोस / आईविन

रेगो की पेंटिंग्स में औरतों का चित्रण

हम सबके मिज़ाज और शौक काफी अलग-अलग, मिले-जुले और मज़ेदार हैं! इनका हमारे जेंडर से कोई लेना-देना नहीं। हमारे आसपास बहुत सारे अलग-अलग किस्म के शरीर भी हैं — पतले-मोटे, लम्बे-छोटे, नाज़ुक, बलवान, लचीले, झुके हुए, गोरे, गेंहुएँ, काले। इनकी काबिलियत किसी मापदण्ड पर नहीं तौली जा सकती।

पौला रेगो पुर्तगाल में एक कैथोलिक (एक ईसाई सम्प्रदाय) परिवार में पली-बढ़ीं। उस समय पुर्तगाल कट्टर कैथोलिक राष्ट्र था। ऐसे में औरतों के लिए बहुत सारी बन्दिशें थीं। उन्हें ज़्यादा पढ़ाई करने और अपना करियर बनाने के अवसर नहीं दिए जाते थे। शादी करना और बच्चे पैदा कर उनका ख्याल रखना ही उनका काम बताया जाता था। पर पौला के पिता उन्हें काफी प्रोत्साहन देते रहे और उनकी अच्छी पढ़ाई करवाई। कॉलेज पढ़ने लंदन भी भेजा।

पौला की ज़्यादातर पेंटिंग्स औरतों की कहानियाँ दर्शाती हैं। ये औरतें अक्सर सशक्त, तगड़ी और आत्मविश्वासी दिखती हैं। रेगो की पेंटिंग्स में गठीले बदन वाली, चेहरे पर उम्र का तकाज़ा लिए जो औरतें हैं वे देखने वालों में खलबली पैदा कर देती हैं। ज़्यादातर लोगों के दिमाग में औरतों की जो छवि बसा दी गई है, उससे काफी अलग हैं ये। ऐसी औरतों को हम जानते भी हैं या रोज़ देखते भी हैं पर ये पेंटिंग्स में कम दिखाई गई हैं। सोचने की बात है ना! आखिर ऐसा क्यों?

हमारे आसपास बहुत सारी औरतें हैं जो बेखौफ हैं, समर्थ हैं और जो खुद की और दूसरों की सुरक्षा और देखरेख करती आई हैं। बहुत सारे मर्द हैं जो शर्मीले हैं, जो घर के कामों में या कला में दिलचस्पी रखते हैं ना कि औरतों के लिए रक्षक और राजकुमार या फिर हीरो बनने में। हम सबके मिज़ाज और शौक काफी अलग-अलग, मिले-जुले और मज़ेदार हैं! इनका हमारे जेंडर से कोई लेना-देना नहीं। हमारे आसपास बहुत सारे अलग-अलग किस्म के शरीर भी हैं – पतले-मोटे, लम्बे-छोटे, नाजुक, बलवान, लचीले, झुके हुए, गोरे, गेंहुएँ, काले। इनकी काबिलियत किसी मापदण्ड पर नहीं तौली जा सकती।

हम सब एक-दूसरे के सहारे और साथ पर निर्भर हैं। हम सब स्वभाव और शरीर

से मिले-जुले हैं। पर क्या हमारी कहानियाँ यह बात ठुकराती हैं? अब जब भी तुम पेंटिंग या चित्र कहानियाँ देखो तो इस बात पर गौर करना।

कहानियाँ (लिखित या चित्रित) दुनिया परखने और कल्पित करने का बहुत खास साधन हैं। कहानीकार (चाहे वे लेखक हों या फिर पेंटर) अक्सर ऐडैप्टेशन या फिर कहानी कहने की किसी और तकनीक के ज़रिए हमें अपने आप को, दुनिया को बारीकी से देखने-समझने और नया रूप दे पाने का सहारा देते हैं। पौला रेगो का स्टूडियो अपने आप में कहानियों का पिटारा है। चित्र 2 व 3 में तुम देख सकते हो कि रेगो किस तरह से अपनी कहानियों के पात्रों की कल्पना करती हैं। वे अलग-अलग किस्म और आकार की गुड़िया या पपेट्स, पोशाक, नकाब वगैरह स्टूडियो में जमा करती हैं और इनमें से निकलते हैं कई दिलचस्प किरदार जिन्हें वे अपनी पेंटिंग्स में उतारती हैं।

साइंस फिक्शन कहानियों की जानी-मानी लेखिका उर्सुला ले गुइन कहानी में कल्पना की शक्ति के बारे में लिखती हैं। वे कहती हैं कि अगर वे अपनी किताबों में द्विलिंगता (bisexuality) के बारे में लिखती हैं तो इसका मतलब ये नहीं कि वे भविष्यवाणी कर रही हैं कि हमारा आने वाला कल द्विलिंगी है। बल्कि वे साइंस फिक्शन के ज़रिए यह कह रही हैं कि अगर हम खुद को दिन के किसी अनोखे पल या फिर किसी खास मौसम में बारीकी से देखेंगे तो पाएँगे कि हम सब पहले से ही द्विलिंगी, मिले-जुले और दिलचस्प हैं!

रेगो खुद लिखती हैं, "The picture allows you to do all sorts of forbidden things. And that is why you do pictures." यानी, "चित्र हमें वे बातें कहने का मौका देते हैं जिन्हें दबाया गया है। और इसीलिए हम चित्र बनाते भी हैं।"

अफसोस है कि रेगो अब हमारे बीच नहीं रहीं। इस साल जून महीने में वे चल बसीं। पर उनकी पेंटिंग्स हमारे बीच अब भी हैं और वे बताती हैं कि रेगो कितनी गज़ब कहानीकार थीं।

चित्र 3. गॉटियर डीब्लांड द्वारा ली गई तस्वीर, 17 दिसम्बर, 2021

अब तक तुम कुछ महिला गणितज्ञों से परिचित हो चुके हो। लेख की इस अन्तिम किश्त में मैं एक भारतीय महिला गणितज्ञ से तुम्हारा परिचय करवा रही हूँ...

अपनी सीमाओं को विस्तार देने के लिए शकुंतला लंदन गईं। बीबीसी के लिए किए एक मशहूर शो से उनका काफी नाम हुआ। उस शो के अन्त में उन्हें
ह्यूमन कम्प्यूटर
की उपाधि दी गई।
सबसे तेज़ मानवीय गणना करने का
गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड
शकुंतला देवी के नाम है। इस किताब के 1982 के संस्करण में उनका नाम शामिल है। कई मौकों पर दुनिया को उनकी तेज़ी-से गणना करने की योग्यता देखने को मिली।
ऐसा ही एक मौका था जब 201 अंकों की एक संख्या का 23वां मूल निकालने के लिए उन्हें केवल 50 सैकंड का समय लगा। जबकि इसी गणना को करने के लिए
कम्प्यूटर को 62 सैकंड लगे।
इमरजेंसी शट डाउन!

गणना करने की अपनी विधियों पर उन्होंने तमाम किताबें लिखीं —
फिगरिंग: द जॉय ऑफ द नम्बर्स, मोर पज़ल्स टू पज़ल यू, इन दि वंडरलैंड्स ऑफ नम्बर्स, दि बुक ऑफ नम्बर्स।
गणना करने में स्कूली बच्चों की मदद के लिए उन्होंने वर्कशॉप भी कीं।

उम्मीद है कि यह लेख तुम्हें पसन्द आया होगा। और अब तुम महिला गणितज्ञों के बारे में और भी जानना चाहोगे। जैसा कि इतिहास में होता है इस लेख के भी कई सारे तथ्य किसी व्यक्तिगत दृष्टिकोण से लिखे गए हो सकते हैं। और हो सकता है कि वो तथ्यात्मक रूप से एकदम सही ना हो। यह लेख महिला गणितज्ञों, उनके संघर्षों और कठिनाइयों पर उनकी जीत के बारे में तुम्हें बताने का एक प्रयास है।

समाप्त

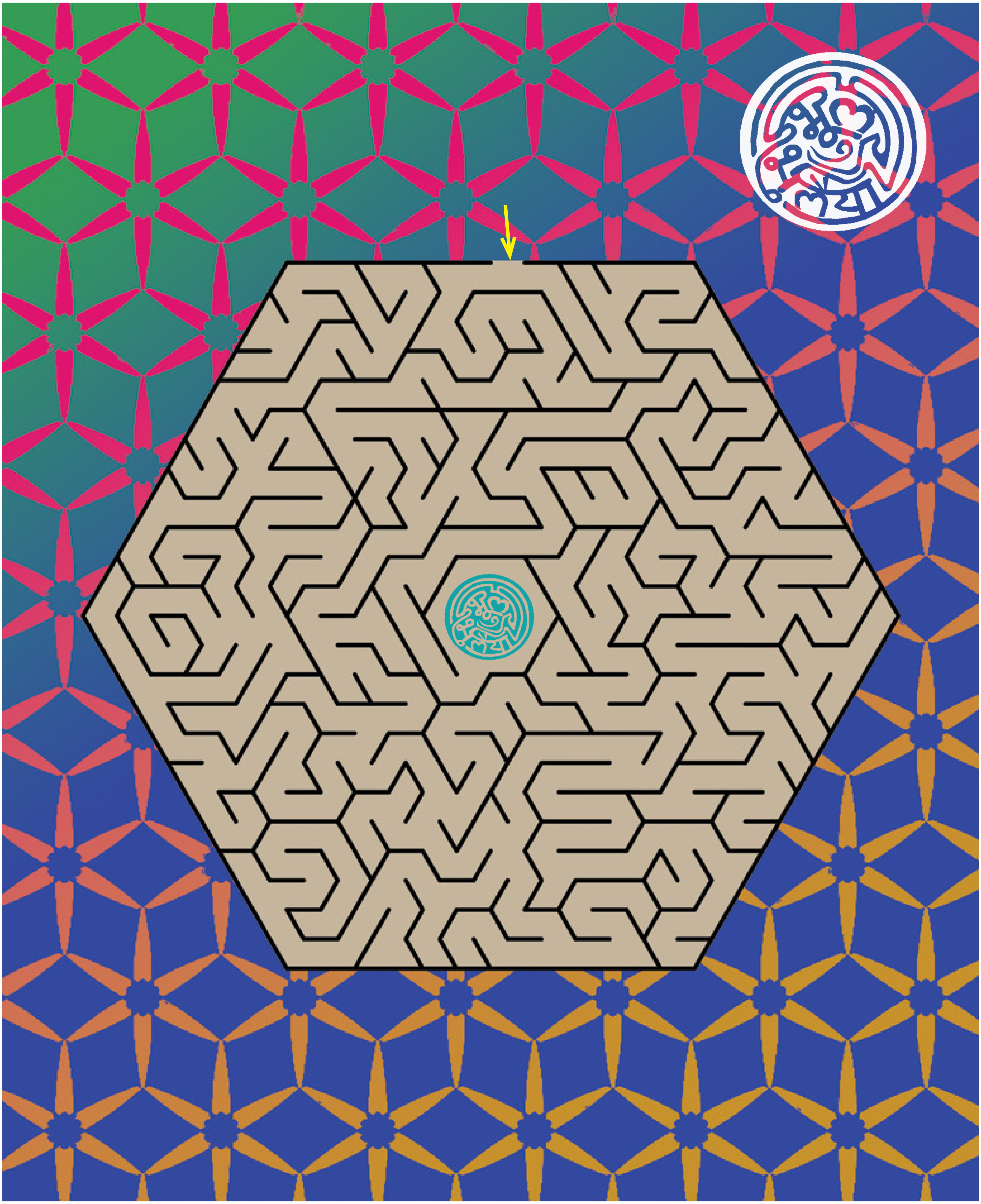

जब पल्लव चाचा हीरो बने

लाल्टू

चित्र: मयूख घोष

सावन की घनघोर बारिश। शुक्र है कि मीत के घर तक प्रीतो और शबनम चार छलाँग में पहुँच जाते हैं। नहीं तो सबको अकेले ही घर बैठे बोर होना पड़ता। हैदराबाद से मीत के पल्लव चाचा आए हुए हैं। जब भी आते हैं, अजीबोगरीब कहानियों का खज़ाना लेकर आते हैं। आज भी जब बाहर झड़ी लगी हुई है, अन्दर वो तीनों पल्लव चाचा को घेरकर बैठे हुए हैं। चाचा तो वे मीत के हुए, पर प्रीतो और शबनम ने भी उन्हें चाचा बना लिया था।

पिछली बार आए थे तो वादा करके गए थे कि अगली बार कोई बढ़िया फिल्म लेकर आएँगे। पर किस्मत! प्रीतो और शबनम पहुँचे ही थे कि बिजली चली गई। शाम का वक्त होता तो तुरन्त अपने-अपने घर लौटना पड़ता। रविवार की सुबह थी। सबने जल्दी-जल्दी होमवर्क भी पूरा कर लिया था। इसलिए अब पूरी छुट्टी थी और थोड़ी उमस सही, कहानी तो सुननी ही थी।

"तो फिल्म तो अब देख नहीं सकते। पर फिल्म की कहानी तो सुना सकता हूँ," पल्लव चाचा ने मुस्कराते हुए कहा।

"हाँ, हाँ, चाचा, हम कहानी सुनेंगे," मीत ने उछलते हुए कहा। प्रीतो उन तीनों में सबसे बड़ी है। उसे पता है कि पल्लव चाचा कहानी सुनाते हुए खुद कहानी का हिस्सा बन जाते है और डींगें मारते हैं। पर उसे भी पल्लव चाचा की बातें सुनकर मज़ा तो आता ही है। इसलिए उसकी आँखों में भी उत्सुकता भरी हुई थी।

"चलो, फिर मैं तुम्हें उस फिल्म की कहानी सुनाता हूँ, जिसमें मैंने काम किया था।"

शबनम ने अचरज से पूछा, "आप हीरो बने थे? आपने पहले तो कभी कहा नहीं!"

"अब देखो! मुझे बीच में डिस्टर्ब मत करना, नहीं तो मैं कहानी भूल जाऊँगा।"

मीत ने उन दोनों की ओर देखते हुए होंठों पर उँगली रखकर चुप रहने का संकेत दिया।

पल्लव चाचा चाय की चुस्की लेकर थोड़ी देर खिड़की के बाहर देखते रहे। बारिश ज़रा हल्की हो गई थी। दूर कुहरा-सा छाया हुआ था।

"बस, ऐसी ही हल्की-सी बूँदाबाँदी हो रही थी जब मेरा दोस्त ऊडी मुझसे मिलने आया था। ऊडी अमेरिका का बड़ा फिल्मकार है। कमाल का बन्दा है। फिल्में बनाता है। खुद ही हीरो भी बनता है और मेरे जैसे लोगों को ढूँढ-ढूँढकर फिल्मों में काम करवाता है।"

प्रीतो ने जेब से मोबाइल फोन निकालकर झट-से गूगल सर्च कर देखा। वाकई ऊडी ऐलन नाम का एक अमेरिकन फिल्म-निर्माता है।

"अरे! कहानी सुनते हुए फोन कैसे देख सकती हो। इसको बन्द करो।" पल्लव चाचा ने डाँटते हुए कहा।

"बस, साइलेंट पर कर रही थी," प्रीतो ने चालाकी-से कहा।

"तो एक बार ऊडी ने मुझसे एक फिल्म में काम करने को कहा। फिल्म की शूटिंग काहिरा में होनी थी।"

मीत और शबनम एक साथ पूछ पड़े, "काहिरा कहाँ है?"

"काहिरा मिश्र की राजधानी है भई, तुमने पढ़ा नहीं भूगोल में?"

"अच्छा, अब आगे सुनो।"

वे तीनों चुप हो गए। पल्लव चाचा बोले, "मैं काहिरा तो पहुँच गया, पर मेरा मन पिरामिड देखने को आतुर था। तो मैंने ऊडी से कहा कि मुझे छुट्टी चाहिए। ऊडी तो सुनकर नाराज़ हो गया। बोला,

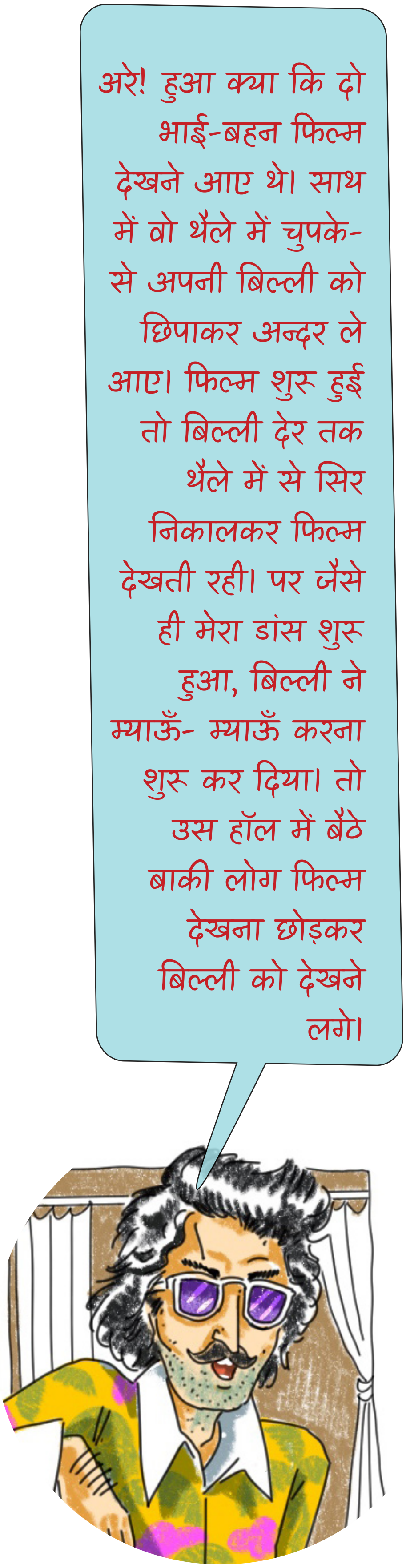

"तुम काम के लिए आए हो या घूमने के लिए?" अब मैं क्या करता।

कई रोज़ तक शूटिंग चलती रही। उन दिनों बम्बइया फिल्मों में एक नया एक्टर आया था अमिताभ नाम का। रोज़ शाम को उसका फोन आता कि पल्लव, ज़रा ऊडी से कहकर मुझे भी बुला लो। एक दिन मैंने ऊडी से कह दिया कि अमिताभ को बुला लो। ऊडी ने फिर मुझे डाँट दिया कि अपने काम से मतलब रखो। मैं क्या करता, अमिताभ को मना करना पड़ा। शूटिंग के दौरान ही एक दिन हमें पिरामिड पर चढ़कर डांस करना पड़ा।"

"आपने डांस किया? शबनम ने पूछा तो प्रीतो ने हँसी रोकने के लिए मुँह पर हाथ रख लिया।"

"और नहीं तो क्या! अरे! जब फिल्म बाज़ार में आई तभी तो हॉल में एक बिल्ली मेरा डांस देखते ही म्याऊँ, म्याऊँ गाने लगी।"

मीत और शबनम हँसने लगे। पर प्रीतो चुप रही।

"अरे! हुआ क्या कि दो भाई-बहन फिल्म देखने आए थे। साथ में वो थैले में चुपके-से अपनी बिल्ली को छिपाकर अन्दर ले आए। बिल्ली देर तक थैले में से सिर निकालकर फिल्म देखती रही। पर जैसे ही मेरा डांस शुरू हुआ बिल्ली ने म्याऊँ-म्याऊँ करना शुरू कर दिया। तो उस हॉल में बैठे बाकी लोग फिल्म देखना छोड़कर बिल्ली को देखने लगे। जब कुछ देर तक बिल्ली का गाना चलता रहा तो मुझसे रहा न गया और मैं उन दोनों के पास पहुँच गया।"

इस बार प्रीतो से रहा न गया। उसने पूछा, "आप भी हॉल में बैठे फिल्म देख रहे थे?"

"अरे नहीं! मैं तो परदे पर नाच रहा था।"

"परदे पर तो लाइट से कम्प्यूटर की डीवीडी चलती है!"

"नहीं, उन दिनों डीवीडी कहाँ थी। रील बनती थी फिल्मों की।"

"तो आप कैसे परदे से उतर आए?"

"देखो, बीच में इतना मत टोको। अरे! मैं तो वैज्ञानिक हूँ ना। मैंने खुद को परदे की तस्वीर में से टेलीपोर्ट करना सीख लिया था।"

"टेलीपोर्ट क्या होता है? सभी बच्चे एक साथ बोले।"

"देखो यह तकनीक बस कुछ ही लोग जानते हैं। अभी पिछले साल चीन के कुछ वैज्ञानिकों ने एक तस्वीर टेलीपोर्ट की थी, जो ऑस्ट्रिया के वैज्ञानिकों ने देखी।"

प्रीतो ने अन्दाज़ा लगाया कि पल्लव चाचा अपने गपोड़ी स्वभाव में आ गए हैं। वह चुप रही।

"तो फिर क्या हुआ? आप परदे से उनके पास आ गए?"

"हाँ, आ गया। यह हॉल मुम्बई शहर में था। पर फिल्म तो लंदन, न्यूयॉर्क में भी चल रही थी। जहाँ-जहाँ यह खबर पहुँची कि मैं परदे से निकल आया हूँ, हर जगह हॉल में मेरा किरदार परदे से उतरकर दर्शकों के बीच आ गया।

"आप सच बोल रहे हैं?" शबनम ने पूछा।

"चुप," मीत ने पल्लव चाचा के कुछ कहने के पहले ही होंठों पर उँगली रखकर चुप रहने का संकेत किया।

पल्लव चाचा बोले, "फिर क्या था, तहलका मच गया। हर जगह फिल्म में से मेरा किरदार परदे से बाहर आ गया था।

ऊडी को किसी ने खबर दी तो वह दौड़ा-दौड़ा मुझे ढूँढने निकला। तब तक मैं उन दोनों भाई-बहन को साथ लेकर सड़क पर निकल चुका था। उनके नाम बड़े खूबसूरत थे। भाई का नाम फिरोज़ और बहन का फिरोज़ा। देर तक बातें करते-करते उन दोनों को भूख लग गई थी। पर वे संकोच के मारे कह नहीं रहे थे। अचानक मुझे लगा कि पेट में गुड़गुड़-सी आवाज़ हो रही है। थोड़ा ध्यान-से सुना तो समझ आया कि वह मेरे पेट से नहीं, उन दोनों के पेट से आ रही थी। मैं उनके साथ शहर के सबसे नामी ढाबे में खाने के लिए गया और उनसे कहा कि हम तीनों के लिए बढ़िया पिज़्ज़ा बनाएँ।"

पल्लव चाचा ने पेट की आवाज़ क्या कहा, प्रीतो को लगा कि कहीं उसकी पेट में हो रही आवाज़ें औरों को न सुनाई पड़ रही हों। अनजाने ही उसका

हाथ अपने पेट पर चला गया। वह बोली, “पर ढाबे में पिज़्ज़ा थोड़े ही बनता है।”

“वो कोई ऐसा-वैसा ढाबा नहीं था भैया। वो इतालवी ढाबा था। कभी तुम लोग मुम्बई जाओ तो पता करना। तो फिर फ़िरोज़ और फिरोज़ा खुशी-खुशी बहुत सारा पिज़्ज़ा खा गए। तुम जानते ही हो कि ज़्यादा पिज़्ज़ा खाने से क्या होता है।”

“क्या होता है?” मीत ने पूछा। प्रीतो मुँह नीचा किए हँसने लगी।

“चुप! बीच में मत टोको। तो फिरोज़ को लग गई टट्टी और वह तो ढाबे के पाखाने की ओर दौड़ा। मैं और फिरोज़ा बैठे उसका इन्तज़ार कर रहे थे कि ऊडी ढाबे के अन्दर आ गया। वह बड़ा परेशान नज़र आ रहा था। मैंने उसे बैठाया और पिज़्ज़ा खाने को कहा। पर वो बैठते ही चीखने लगा।” “तुम ऐसे कैसे परदे से निकल आए, जल्दी वापस चलो, अगर फिल्म थिएटर में बन्द हो गई तो तुम्हें वापस कौन फिल्म में ले जाएगा?”

मैंने कहा, “रिलैक्स ऊडी! यह तो सोचो कि जितनी देर फिल्म चल रही है, लोग हॉल में बैठे खुशी-से देख रहे हैं। अगर चाहो तो उनसे कुछ एक्स्ट्रा पैसे लेने के लिए कह दो।”

“अरे!” ऊडी बोला, “वहाँ तो बाकी किरदारों में बहस चल रही है कि वे सारे भी परदे से निकल आएँ या नहीं।”

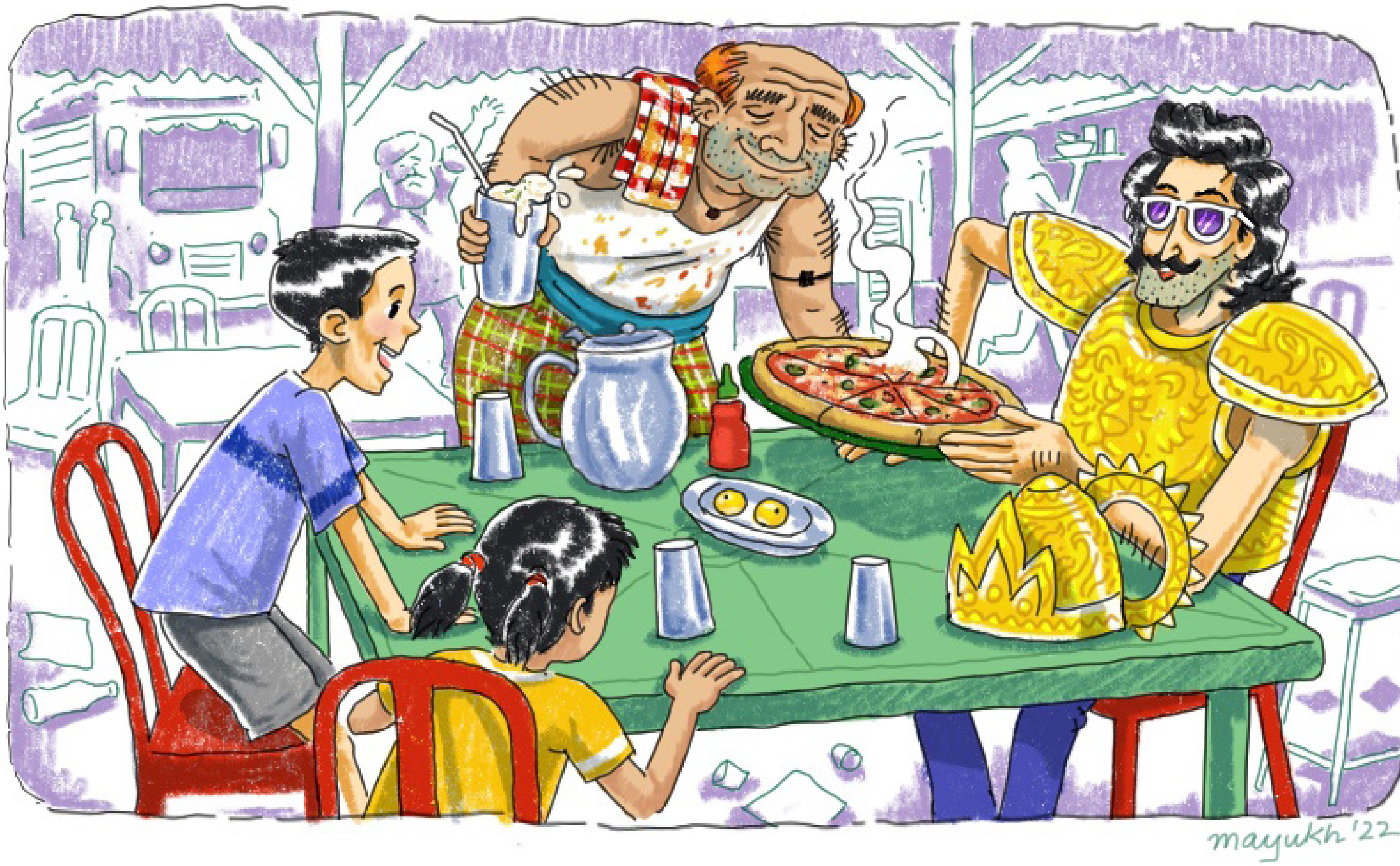

मैंने कहा, “घबराओ मत ऊडी! यह तकनीक मेरे सिवा और कोई नहीं जानता।” इसी बीच फ़िरोज़ वापस लौट आया। मैंने ऊडी से कहा कि देखो, “मैं अब वापस लौटूँगा तो इन बच्चों के साथ ही लौटूँगा।”

“और वह बिल्ली भी साथ जाएगी?” शबनम ने पूछा।

“अरे! तुम फिर बीच में बोल पड़ी।” पल्लव चाचा कुछ पल चुप रहे। प्रीतो को लगा कि वे शायद बिल्ली की बात भूल गए थे।

पर पल्लव चाचा तुरन्त बोले, “बिल्ली को ढाबे के बाहर बैठाना पड़ा था ना! और फिरोज़ा ने पिज़्ज़ा के कुछ टुकड़े अपनी जेब में डाल दिए थे। हम लोग बाहर निकले। पर बिल्ली तो शायद किसी चूहे के पीछे दौड़ भागी थी। वैसे बिल्लियों में यह खासियत होती है कि वे ऐसे महाकाश से आए लोगों से बातें कर सकती हैं, जिन्हें हम देख नहीं पाते।”

प्रीतो ने सोचा कि आज तो पल्लव चाचा ने हद ही कर दी। पर वह चुप रही।

“फ़िरोज़ और फिरोज़ा थोड़ी देर अपनी बिल्ली ढूँढते रहे और फिर बोले कि हम तो फिल्म में नहीं जाएँगे, क्योंकि हमारी बिल्ली हमारे बिना नहीं रह सकती।”

ऊडी परेशान होकर बोला, “यार! जल्दी करो, तुम्हें तुरन्त लौटना है।” अब क्या करता – मुझे फिरोज़ और फिरोज़ा को वहीं छोड़ना पड़ा।

ऊडी के साथ थिएटर लौटा और परदे में किरदारों की बहस में शामिल हो गया। वे सब बहस करते हुए थक चुके थे। मुझे देखते ही वे सब वापस फिल्म की कहानी के मुताबिक अपने डायलॉग बोलने लगे और घण्टे भर बाद फिल्म खतम हो गई।

मीत से रहा नहीं गया। पूछा, “हमें भी किसी फिल्म में टेलीपोर्ट कर दीजिए ना?”

प्रीतो ने हँसकर कहा, “अरे बुद्धू! चाचा कहानी सुना रहे थे।” पल्लव चाचा ने नाराज़-सी नज़र प्रीतो की ओर उठाई। पर तभी बिजली आ गई और सभी फिल्म देखने को आतुर हो उठे। प्रीतो ने शरारत भरी मुस्कान के साथ देखा कि पल्लव चाचा अब उसे भूलकर डीवीडी प्लेयर को चलाने में जुट गए हैं।

“बिल्ली को ढाबे के बाहर बैठाना पड़ा था ना! और फिरोज़ा ने पिज़्ज़ा के कुछ टुकड़े अपनी जेब में डाल दिए थे। हम लोग बाहर निकले, पर बिल्ली तो शायद किसी चूहे के पीछे दौड़ भागी थी। वैसे बिल्लियों में यह खासियत होती है कि वे ऐसे महाकाश से आए लोगों से बातें कर सकती हैं, जिन्हें हम देख नहीं पाते।"

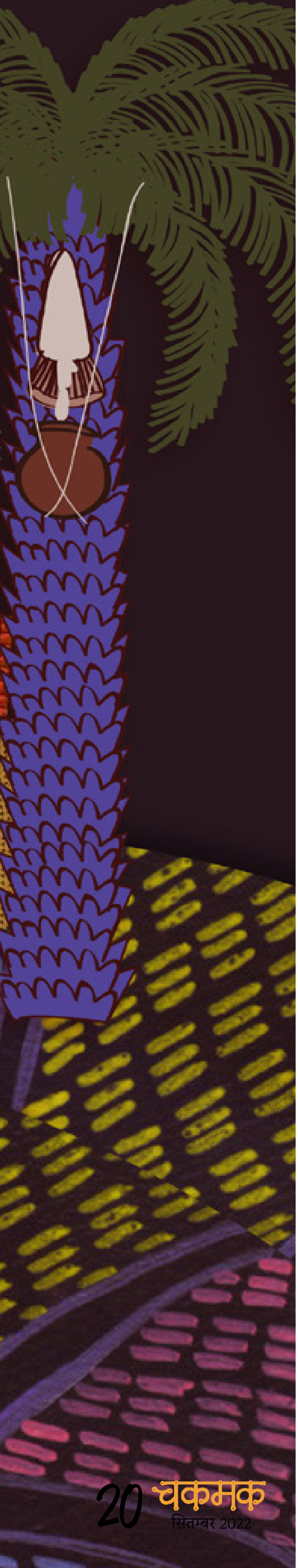

छींद रस

बारसे रोशन
नौवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़

चित्र: ऋतुजा राजेंद्र सिद्दम

हमारे सुकमा में छींद के झाड़ बहुत मिलते हैं। मेरे गाँव के लोग धान की फसल खतम होने के बाद ठण्ड के मौसम में छींद झाड़ काटना शुरू करते हैं। झाड़ काटने का मतलब उसे पूरा काटना नहीं बल्कि झाड़ पर चढ़कर, पत्ती जहाँ से निकलती है वहाँ त्रिभुज आकार में काटते हैं जिससे छींद रस निकल जाए।

छींद रस निकालने के लिए लोग शाम को झाड़ पर चढ़ते हैं, काटते हैं और हण्डी लटकाकर आते हैं। रात भर में हण्डी भर जाता है। सुबह के समय जब कोहरा मचा रहता है तब लोग अपनी साइकिल लेकर जाते हैं। अपने साथ डब्बा भी ले जाते हैं। झाड़ पर चढ़कर रस उतारते हैं और रस को डब्बे में डालकर घर लाते हैं। रस को छन्नी से छानकर पीते हैं या फिर बेचने बाज़ार ले जाते हैं। एक कसला दस रुपए में बेचते हैं।

छींद रस उतारते ही पीने से मीठा लगता है, पर कुछ घण्टों बाद खट्टा हो जाता है। मैंने एक दिन पिताजी से पूछा कि छींद झाड़ को ठण्ड के मौसम में क्यों काटते हैं। तब उन्होंने बताया कि बरसात के दिन बारिश की बूँदों से छींद रस खराब हो जाता है। पिताजी ने बताया कि गर्मी में छींद के झाड़ में फल लगते हैं और छींद का रस फलों में जाता है। पर गर्मियों में रस ज़्यादा निकालते हैं क्योंकि शादी और त्यौहार होता है जिसमें रस बहुत पीते हैं।

घर पर कोई काटने वाला नहीं होने से मैं और मेरा दोस्त अरुण काटने जाते हैं। मोकुम मने चढ़ने वाली रस्सी से छींद झाड़ में चढ़ते हैं और घर में मेहमान आने से झाड़ से रस निकालकर उनको पिलाने के लिए लाते हैं।

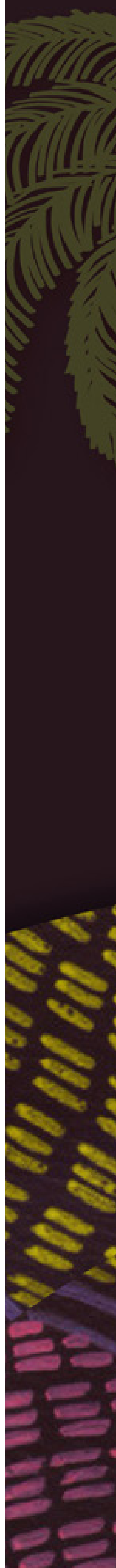

अन्तर ढूँढो

चित्र: अमृता

इन दो चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

पहाड़ के बुलावे पर, सड़क की किताब में शामिल एक पन्ना मैं - भाग 1

निधि सक्सेना

यादों का एल्बम है।

लेह में लिखी डायरी पढ़ते हुए, तस्वीरें देखते हुए, उस याद की याद

क्या तुम्हें पता है हम कभी-कभी खुद को खो देते हैं! ये खुद को खोना कैसा होता है ये तब ही पता चलता है जब अपने साथ होता है! फिर अपनी पुरानी चीज़ों, खिलौनों, छोटे हो चुके कपड़ों या अपने बचपन की कहानियों, फोटो या डायरी में हम खुद को पाते हैं। तो मैं 2009 में लेह गई थी उस दौरान लिखी एक डायरी से मैंने उन दिनों को फिर से पा लिया। जैसे मैं फिर से लेह पहुँच गई। अरे! क्या ये मैं थी! तब मैं कितनी खुश थी, कितनी बहादुर! अरे! सब कुछ कितना अनूठा था, उफ्फ इतना सुन्दर था क्या सब? कहाँ गया? अरे! मैं फिर से इसी तरह क्यूँ नहीं निकल जाती।

तब मेरे पास कोई पैसा न था, सामान भी नहीं था! मुझे याद है पूरी यात्रा में मैंने एक ही पैंट पहनी थी। एक ही जैकेट और दो टी-शर्ट थे! और एक दोस्त था। बस!

घर पर बताया नहीं था। पैट्रोल तब उतना महँगा न था। इसने हमारी काफी मदद की! बस हम चल पड़े थे। पैसा, इजाज़त, सामान नहीं होने पर भी जिस इकलौती चीज़ की वजह से ये यात्रा हुई - वो थी तस्सल्ली! तसल्ली खूब थी! खूब ही। इत्मिनान था कि कुछ हो भी गया तो क्या ही हो जाएगा, आसमान तो नहीं ही टूटेगा ना!

मेरे पास कोई मैप भी न था। थोड़ा पता था कि पंजाब होते हुए हिमाचल से लेह आएगा। इसलिए दिल्ली में जहाँ हम रहते थे वहाँ गली से निकलते ही रास्ता पूछना शुरू कर दिया था, "ओ भाई साहब! ये पंजाब जाने का रस्ता किधर से है?"

"पंजाब में कहाँ?"

"हिमाचल जाना है, पंजाब होते हुए!"

"तो चंडीगढ़ पड़ेगा। इस बाइक से ही जा रही हो?"

"जी।"

फिर कुछ और बातें होतीं और वो 'हैप्पी जर्नी' कहते हुए रास्ते का बयान खतम करते। तब गूगल मैप तो ईजाद भी न हुआ था। न सोचा था कि कभी ऐसा दिन भी आएगा कि इन्सानों से रस्ता पूछने के बजाय मशीनें अपने आप बताती चलेंगी – "टेक अ यू-टर्न आफ्टर टू हंडरेड एंड थर्टी मीटर्स।" खैर बाद की बातें बाद में। चलो, पहले देखते हैं कि डायरी में क्या लिखा था।

पीछेवाला छूट चुका है, नया मिला नहीं है!

20 मई

इस वक्त पंजाब में कहीं हूँ! मोहाली निकल चुका है और लुधियाना आया नहीं है। मोहाली लगभग मुँह अँधेरे निकला। मुझे क्यूँ याद है मोहाली! सुना-सुना सा लग रहा है। क्रिकेट फैन तो मैं हूँ नहीं! शायद रस्किन बॉन्ड की किसी किताब में ज़िक्र था। कौन-सी? शायद *रस्टी के कारनामे* में वो होस्टल से भागकर मोहाली भी आते हैं। हाँ! मैं भी तो लगभग भागी हुई ही हूँ! हालाँकि ना मेरी कोई शिकायत दर्ज होगी और ना मेरा कोई पीछा करेगा! तो फिर? फिर किस से भागी हुई हूँ? पता चलेगा तो बताऊँगी। घर पर यूँ बताया नहीं है, लेकिन घर पर रहती भी तो नहीं हूँ। सो मेरे बताने ही पर पता चलेगा। पर बताती तो जाने देते?

रात भर सड़क पर गुज़री। अभी कोई खास दूरी तो तय की नहीं है और रात कहीं होटल में गुज़ारने के ना तो पैसे हैं, ना हिम्मत! हिम्मत इसलिए क्यूँकि मुझे ये शहर के होटल हमेशा कुछ अजीब-से लगते रहे हैं। और मुख्य बात ये है कि चार-पाँच घण्टे के लिए पैसा कौन खर्चता। रात सड़क पर होने से PB नम्बर के सजीले ट्रक दिखे। ना जाने किस तादाद में ये ट्रक दिल्ली के ट्रकों की तुलना में कुछ ज़्यादा ही सजे थे। और ट्रकों के पीछे लिखी टिप्पणियाँ और बातें सब पंजाबी में थीं।

अब यहाँ भी देख रही हूँ तो दीवारों पर विज्ञापन, दुकानों के साइनबोर्ड सब पंजाबी में हैं। अब ये! सूना-सा ढाबा है लेकिन इतना बड़ा। चारों ओर फैले खेत हैं। गर्मी में पीले-पीले लग रहे हैं। कुछ सूखे-सूखे भी। बारिश में हरे होते होंगे। लगभग ऐसा ही तो पंजाब सोचा था मैंने, खेतों वाला। पर बाकी सब बहुत सूना-सा लग रहा है। मुँह पर कोई दो किलो धूल जमी हुई है। लेकिन तसल्ली पूरी है क्यूँकि देख लिया है कि इस ढाबे में लस्सी बनाने के लिए दो वॉशिंग मशीन लगी हुई हैं। मेन्यू में बस आलू का पराँठा है जो आ रहा होगा।

मैं थककर खाट पर लेटी थी तो एक बुड्ढे सरदार जी ने आके उठा दिया। बहुत देर तक तो समझ नहीं आया कि क्या कह रहे हैं। बस गुस्सा दिख रहा था! अब समझ आया। "तू मेरी मंझी पर बैठ गई, उठ जा परे बैठ।" उफ्फ... खाट ही तो है बड़े आदमी, आप दूसरी पर बैठ जाते! ये तेरी-मेरी! अब तो खैर पता नहीं कितने दिन मेरी खाट, मेरा कमरा, मेरा शहर, मेरी अलमारी और जो कुछ भी मेरा होता है, वो मेरे साथ नहीं होगा। और जो मेरे साथ होगा वो दूसरों का ही होगा। या कुछ ही देर के लिए यानी

टेम्प्रेरली मेरा होगा। पर "मेरा" छूटने का दुख नहीं है। ऐसा क्या मेरा जिसकी जुदाई का दुख भी न हो! किसी नए की हैरानी की खुशी-सी है, इन्तज़ार है। 'लेह' बस नाम सुना है। अपर हिमालया! देखा भी नहीं। हज़ारों किलोमीटर दूर। कहाँ जा रही हूँ! कैसा होगा! कब पहुँचूँगी। बस सवाल हैं। जवाब अभी मिले, शायद!

खैर, देखते हैं। रास्ता बहुत लम्बा है। पहला पड़ाव रात के लिए मनाली सोचा था। पर इस स्पीड से तो लगता नहीं पहुँच पाऊँगी। एक मन बार-बार कर रहा है लेह जाऊँ ही ना, मनाली ही होकर आ जाऊँ। देखते हैं पहले वहाँ तो पहुँचुँ। पहुँच पाऊँगी क्या? या लौट जाऊँ! आनेवाली मंज़िल से छूटा हुआ ठिकाना नज़दीक है अभी।

हम शाम को निकले क्यूँकि सुबह उठने में रोज़ की तरह आज भी देर हो गई थी और मई की दोपहर सिर्फ नींद लेने के लिए होती है। हालाँकि देर से उठने के बाद दोपहर का सोना दूसरों के लिए मुश्किल होता है लेकिन हम ये कारनामा करते ही रहते हैं। तो हम शाम को निकले। मेरी बाइक थी तो एनफील्ड लेकिन ना जाने कितने हाथों से गुज़री हुई। अपने मन से चलती और मन होता तो रुक जाती। हालाँकि उसकी स्पीड की तुलना दूसरी बाइकों से की जाती तो वो मस्ती से बस टहलती थी, भागने जैसी गति का तो सोच भी न पाती। फिर भी मैंने उसका नाम 'उड़नछू' रखा है। खड़ी हो जाती है तो कहती हूँ – "ओ उड़नछू, छू हो जा!"

इसे पढ़ते हुए अब याद आता है कि उन सरदार जी की मंझी पर क्या नींद आई थी। उनके उठाने के बाद किसी मंझी पर नींद नहीं आई। होगा कुछ तो मंझी में जादू।

पहाड़ के दरवाज़े पर दस्तक

21 मई, मण्डी

ज़मीन से कम से कम ऊपर तो आई। हिमालय आ गया है। हालाँकि अभी वो हिमालय नहीं महसूस हो रहा जिसकी कल्पना होती है, बर्फीली चोटियों वाला। लेकिन पहाड़ है। हवा साफ हो गई है। जंगल है। और सबसे बड़ी बात सड़कें सर्पिली हो गई हैं। सड़क की किताब में चढ़ाई और उतराई का पाठ शामिल हो रहा है। सुना है अभी ये चढ़ाई-उतराई के पाठ और कठिन होंगे, अभी तो शुरुआत है। पर पेड़ों का हरा रंग गाढ़ा होता जा रहा है। हिमाचल आ गया है। कितना इन्तज़ार था, सुनने-बोलने में ही कितना सुन्दर लगता है – हिमाचल। क्या बज रहा होगा! शायद शाम के पाँच बजे होंगे। घड़ी तो नहीं है। (घड़ी कितनी फिज़ूल चीज़ है इसका अन्दाज़ा अभी से हो रहा है।)

फिलहाल एक चाय की दुकान पर हूँ। नदी दिख रही है। यहाँ धूप दिल्ली जैसी नहीं है, कम तीखी है। मुझे पता नहीं था ये शहर भी आएगा इस रस्ते पर। अचानक आ गया। किसी सरप्राइज़ गिफ्ट की तरह। शायद ही किसी और को इतनी खुशी होती यहाँ पहुँचकर जितनी मुझे हुई।

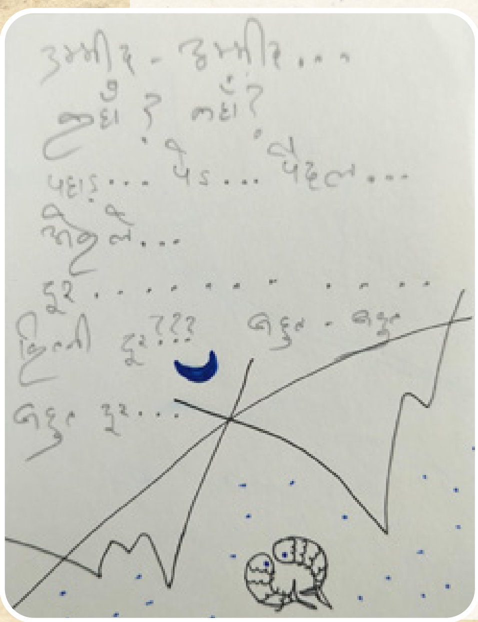

मेरी पसन्दीदा फिल्म है, *करीब*। उसके हीरो-हीरोइन इसी शहर में रहते थे। चलते-चलते अचानक मण्डी देखा तो याद आ गया। मण्डी के बोर्ड के साथ ही गुरुद्वारा दिखा। फिल्म में भी गुरुद्वारा था, जहाँ हीरो-हीरोइन मिलते थे। बाइक खड़ी करने के संग ही सरदार जी ने खाने के लिए बुला लिया। दाल-रोटी का लंगर! यार गुरुद्वारे मिलते रहें तो ऐसे तो पूरी ज़िन्दगी घूमा जा सकता है। कीर्तन की हल्की-हल्की आवाज़...। अब और आगे तो नहीं जाया जाएगा, जगे-जगे चौबीस घण्टे से ज़्यादा हो गए हैं।

मैंने दुकानवाले भाईसाहब से कहा है कि मुझे यहाँ आँगन में स्लीपिंग बैग डालकर सोने दें। पर मना कर रहा है। बोला लड़कियों के लिए सही नहीं है। मैंने भी कहा तो है कि स्लीपिंग बैग में किसे क्या पता होगा कौन है। खैर! रात होने में अभी तीन-चार घण्टे और हैं, सोने का ठिकाना भी हो जाएगा।

जारी...

अब इतने साल बाद मुझे *करीब* फिल्म शायद ही पसन्द आए। लेकिन हाँ गाने उसके अब भी अच्छे लगते हैं। और मण्डी शहर और वो चप्पलों में घूमता, बेपरवाह-सा हीरो अब भी सुन्दर लगता है।

अफ्रीकी चीते भारत में

रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

क्यों क्यों

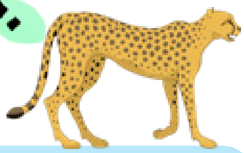

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

कहते हैं कि कम रोशनी में पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं? क्या यह सही है, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

हमने कई बार अपने बड़ों से सुना है कि उजाले में पढ़ो या उजाले में टीवी देखो। और पूछने पर कहते हैं कि ऐसा न करने पर हमारी आँखें कमज़ोर होती हैं। मुझे लगता है कि कम रौशनी में पढ़कर हमारी आँखों में ज़्यादा ज़ोर पड़ता है जिससे हमें सिरदर्द भी हो जाता है। इस कारण से हमारी आँखें भी कमज़ोर हो जाती हैं। हमें चश्मे भी लग सकते हैं।

माहिर सिंह, आठवीं, प्रोमेथियस स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मुझे लगता है कि ये पढ़ाई से बचने का बहाना है।

शौर्य माथुर, आठवीं, प्रोमेथियस स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

कम रौशनी में पढ़ने से आँखें कमज़ोर नहीं होतीं। अगर अपनी आँखें पहले से कमज़ोर हैं और हम कम रोशनी में पढ़ते हैं तो आँखों पे दबाव पड़ता है और आँखें कमज़ोर हो जाती हैं।

संतुष्टि बावस्कर, दसवीं, देवास, मध्य प्रदेश

कुछ दिनों पहले तुमने टीवी-पेपर में भारत में चीतों की वापिसी की खबर सुनी-देखी होगी। 50 साल से भी पहले विलुप्त इस जानवर के कुनबे के 16 सदस्यों को मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में दक्षिण अफ्रीका से लाया जा रहा है। इनको लाने से पहले वैज्ञानिकों ने कई सारी तैयारियाँ की हैं, जानकारियाँ हासिल की हैं। मसलन - चीतों के लिए पर्याप्त शिकार है या नहीं, घास के मैदानों की पर्याप्त उपलब्धता है या नहीं, कौन-से जानवर या बीमारियाँ उनके लिए खतरा बन सकते हैं आदि।
कहते हैं कि जंगली चीते से आज तक किसी इन्सान को चोट नही पहुँची है। तो इन्हें यहाँ लाने से आसपास के मनुष्यों को कोई खतरा शायद ना हो। फिर भी, उन जंगलों में एक नया परभक्षी आ रहा है, तो वहाँ की बनी-बनाई व्यवस्था में कुछ तो उथल-पुथल होगी। हज़ारों-करोड़ रुपये खर्च हो रहे हैं और कई लोगों के सवाल हैं चीतों की वापसी को लेकर।

अगले अंक के लिए सवाल है—

तुम्हें क्या लगता है — क्या विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए, और क्यों या क्यों नहीं?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।
जवाब तुम हमें
chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।
हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

अगर हम कम रौशनी में देखेंगे तो हमारी आँखें खराब हो सकती हैं। क्योंकि हम अपनी आँखें गड़ाकर देखेंगे तो हमारी आँखों में दर्द होने लगता है। और हमारी आँखों से पानी निकलने लगता है। उससे हमारी आँखें खराब होने लगती हैं। अगर हम ज़्यादा रौशनी में भी देखेंगे तो भी हमारी आँखें खराब हो सकती हैं। क्योंकि यह सारे लक्षण उसमें भी होते हैं।

उर्मिला, आठवीं, अपना तालीम घर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

कम रौशनी में पढ़ने से आँखें खराब होती हैं। यह सच है। पढ़ते समय आँखों को रौशनी ठीक से ना मिले तो आँखों पर दबाव पड़ता है और कॉन्सन्ट्रेट करने में भी दिक्कत होती है।

स्वर्णदीप बामनिया, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

सभी जन्तुओं की आँख की बनावट अलग-अलग होती है। जैसे उल्लू, चमगादड़ और रात्रिचर जानवर रात को अच्छे-से देख सकते हैं। लेकिन हमारी आँखों के लिए पर्याप्त उजाला ज़रूरी है। इसलिए कम रौशनी या अँधेरे में हम नहीं देख पाते। यदि हम कम रौशनी में पढ़ते हैं तो आँखों में दर्द होता है और आँसू बहने लगते हैं।

श्यामजी पाण्डे, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हाँ होता है ना क्यों नहीं होता है लेकिन मैं तो चद्दर तानकर सो जाता हूँ। अब जो पढ़ने वाला है वो तो नहीं सोएगा, जो नहीं पढ़ने वाला बच्चा है वो सोएगा! राम-राम

अभय सिंह, पाँचवीं, ऑक्सफोर्ड स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

तो प्रश्न का उत्तर है कि हाँ कम रौशनी में पढ़ने से आँखें खराब होती हैं। तो आँखें कम रौशनी में पढ़ने से इसलिए खराब होती हैं क्योंकि जब हम अधिक रौशनी में पढ़ते हैं तब हमारी आँखों की जो नसें होती हैं उन पर कम ज़ोर पड़ता है और हमारी आँखें खराब नहीं होती हैं। मगर जब हम कम रौशनी में पढ़ते हैं तो हमारी आँखों की नसों पर अधिक ज़ोर पड़ता है। इस वजह से आँखें खराब हो जाती हैं और हमें ठीक से दिख नहीं पाता।

कनिष्क ठाकुर, चौथी, आर.जी.एन.वी. खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मुझे जहाँ तक पता है तेज़ रौशनी से आँखें कमज़ोर होती हैं। वैसे जहाँ तक आँखों का सवाल है तो वो तो फोन चलाने से भी खराब होती हैं।

पीयूष प्रजापत, आठवीं, देवास, मध्य प्रदेश

नहीं। अगर आप कम रौशनी में पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं तो आपकी आँखों की पुतलियाँ फैल जाती हैं ताकि लैंस के ज़रिए आपके रेटिना में ज़्यादा रौशनी जा सके। रेटिना के भीतर जो कोशिकाएँ मौजूद होती हैं वो मिल रही रौशनी का आकलन कर दिमाग को सन्देश भेजती हैं कि आपकी आँखें क्या देख सकती हैं और क्या नहीं।

गविश खन्ना, बारहवीं, माता भगवती चड्ढा निकेतन, नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमें न ज़्यादा रौशनी में पढ़ना चाहिए और न ही कम रौशनी में। लगातार कम रौशनी में पढ़ने से हमारी आँखों पर दबाव पड़ता है। हमारी पुतली और आइरिस पर भी असर पड़ता है। इससे हमारी आँखें धीरे-धीरे कमज़ोर होने लगती हैं। इससे हमें कम दिखता है। कुछ लोगों की आदत होती है कम रौशनी में पढ़ने की। पर ये उनके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। ज़्यादा रौशनी जैसे सूरज की तेज़ किरणों में भी नहीं पढ़ना चाहिए। इससे भी हमारी आँखें कमज़ोर हो सकती हैं।

उर्वशी जोठे, ग्यारहवीं, कैम्ब्रिज हायर सैकेंडरी स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

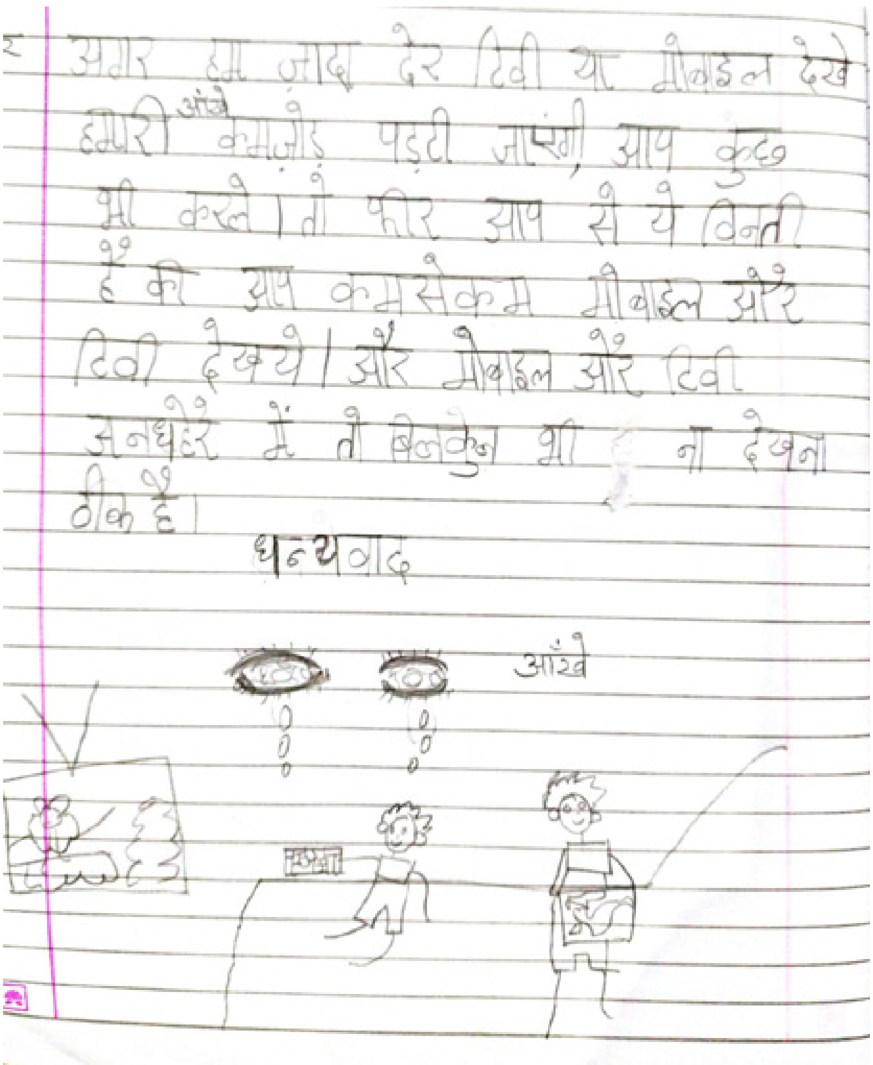

चित्र: सएेश गुप्ता, तीसरी, हेरिटेज स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

अँधेरे में पढ़ने से आँखों पर ज़ोर पड़ता है और आँखें कमज़ोर हो जाती हैं। कम रौशनी में देखने पर आँखों की माँसपेशियों में थकान हो जाती है। इसलिए हमें कम रौशनी में नहीं पढ़ना चाहिए।

आरुनिया न्योलिया, चौथी, आर्यमन विक्रम बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ लर्निंग, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

बचपन से ही हमें सुनने को मिलता है कि 'लाइट लगाकर पढ़ो नहीं तो चश्मा लग जाएगा' ये कितना सच है यह मुझे नहीं पता... हाँ कम रौशनी में पढ़ने से हमारी आँखें कमज़ोर तो हो जाती हैं क्योंकि हम जुगनू तो हैं नहीं जिन्हें अँधेरे में भी दिखाई दे...

हर्षिता कोशले, बारहवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

बच्चों में ‘लॉकडाउन मायोपिया’

कोरोना के चलते जब स्कूल बन्द हो गए तो बच्चे लगभग दो साल तक घर पर ही रहे। इस दौरान उनकी शिक्षा और मनोरंजन डिजिटल स्क्रीन में सिमट गए। इसका मतलब है कि वे अधिक समय तक मोबाइल फोन देख रहे हैं। नेत्र रोग विशेषज्ञों का कहना है कि कोविड-19 महामारी के फैलने के बाद से 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में मायोपिया (निकट दृष्टिता) के मामले बढ़े हैं। यह आँखों का ऐसा विकार है जिसमें दूर की चीज़ें देखने में कठिनाई होती है।

विशेषज्ञ चिकित्सकों का कहना है कि बच्चों में ‘भेंगेपन’ के मामले भी अधिक देखे जा रहे हैं। एक निजी अस्पताल में सलाहकार नेत्र रोग विशेषज्ञ के अनुसार, “हमारे आँकड़े बताते हैं कि इस महामारी के दौरान 5-15 वर्ष की उम्र के बच्चों में मायोपिया के मामलों में 100 प्रतिशत वृद्धि और भेंगेपन के मामलों में पाँच गुना वृद्धि हुई है।”

वे बताती हैं कि लॉकडाउन के दौरान कम्प्यूटर, लैपटॉप और मोबाइल फोन या टैबलेट के माध्यम से काम हुआ। और इस दौरान बार-बार ब्रेक भी नहीं लिए गए। शैक्षणिक व अन्य उद्देश्यों से स्क्रीन को घूरने के समय में काफी वृद्धि हुई है। आँखों पर पड़ने वाला यह तनाव भेंगेपन का कारण हो सकता है और मायोपिया को बढ़ावा देता है।

एक अन्य नेत्र रोग विशेषज्ञ बताते हैं कि कोविड-19 महामारी की वजह से इस समस्या में तेज़ी आई है। चूँकि खुद को और परिवार को सुरक्षित रखना ही लोगों की सर्वोच्च प्राथमिकता थी, इसलिए लोग नेत्र रोग विशेषज्ञों सहित अन्य चिकित्सकों से भी मुलाकात से बचते रहे।

वे आगे बताते हैं, “बच्चों का नेत्र रोग विशेषज्ञ के पास जाना नहीं हो पाने की वजह से कई बच्चे नामुनासिब पॉवर का चश्मा पहनते रहे। इससे उनकी आँखों पर ज़ोर पड़ा। इससे उनकी नज़र और भी कमज़ोर हुई। बिना ब्रेक लिए लगातार डिजिटल स्क्रीन पर काम ने इस समस्या को और बढ़ाया। अक्सर 21 वर्ष की आयु तक नेत्रगोलक (Eyeball) का साइज़ बदलता है। आम तौर पर बढ़ती उम्र में चश्मे का नम्बर बदलता है। गलत नम्बर वाले चश्मों का उपयोग और अधिक समय डिजिटल स्क्रीन पर बिताने से दृष्टि और भी कमज़ोर हो सकती है।”

इससे बचने के लिए विशेषज्ञ मोबाइल फोन की बजाय लैपटॉप या डेस्कटॉप के इस्तेमाल की सलाह देते हैं क्योंकि बड़ी स्क्रीन और आँखों के बीच की दूरी अधिक होती है। इसके अलावा, स्वस्थ और सन्तुलित आहार के साथ-साथ मैदानी खेल खेलने और दिन में एक से दो घण्टे धूप में रहने की सलाह भी दी जाती है।

स्रोत फीचर्स से साभार

माँ की बात

अमेया विक्रम सिंह
पहली, डीपीएस वाराणसी, उत्तर प्रदेश

जैसा आप समझ रहे हैं वैसा नहीं है, मैं अपने पापा की माँ को ही 'माँ' कहती हूँ। मैं जानती हूँ कि वो मेरी दादी माँ हैं, पर उन्हें 'माँ' कहना ही मुझे अच्छा लगता है। क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि मम्मा से भी ज़्यादा वो मुझे प्यार करती हैं। मम्मा तो अपना ढेर सारा प्यार मेरे छोटे भाई को बाँट देती हैं। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती थी। मैं अक्सर उसे धक्का देकर गिरा देती थी जिसके लिए मुझे काफी डाँट मिलती थी। और मुझे ऐसा लगता था कि ऐसा छोटे भाई की वजह से है।

जब से वह आया है मम्मा मुझसे कम प्यार करने लगी हैं। इसी बीच दादी माँ गाँव से हमारे साथ रहने आईं। वो मुझे रोज़ ढेर सारी अच्छी कहानियाँ सुनातीं। मैं उनकी हर बात मानने लगी। पहले मैं भाई के साथ बहुत लड़ाई भी करती थी। पर माँ ने मुझे समझाया कि तुमको अपने भाई के साथ लड़ना नहीं चाहिए, वरना बड़े होने पर तुम्हें अपने इस व्यवहार पर बड़ा दुख होगा। अब मैं अपने भाई के साथ लड़ाई नहीं करती हूँ। हम दोनों खूब खेलते हैं। माँ की सीख मैं हमेशा याद रखूँगी।

आम का लालच

महक
मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरा पन्ना

एक दिन की बात है। जब मेरी मम्मी फल के ठेले पे से एक किलो सेब लाई थीं तो मेरी मम्मी ने ज़ोया से कहा कि ज़ोया सेब की पन्नी घर में रखकर आ जा। तो मेरी बहन ज़ोया खेल रही थी। वो बोली कि मैं नहीं रखकर आ रही हूँ। तो मैं वहीं खड़ी थी तो मेरी मम्मी ने कहा कि ये रखकर आ जा। तो मैंने पन्नी ली और मैंने दो आम पन्नी में से उठा लिए। और रचना के घर लेकर भाग गई। फिर रचना और मैंने हम दोनों ने एक-एक आम खाया।

चित्र: जैनिल गोहिल, चौदह साल, बाल भवन सोसाइटी, वड़ोदरा, गुजरात

सुन्दरवन

पूजा लोधी
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला
मकरोनियाँ खुर्द, सागर, मध्य प्रदेश

रिया अपने डॉगी के साथ घूमने जा रही है। वह जा रही थी तो रिया को रास्ते में एक भालू मिला। रिया ने पहले भालू का नाम पूछा। भालू बोला, "मेरा नाम राजू है।" रिया राजू से बोली, "राजू तुम कहाँ जा रहे हो?" राजू बोला मैं मेला देखने जा रहा हूँ।" रिया बोली, "मैं और मेरा डॉगी भी तुम्हारे साथ चलें?" राजू बोला, "हाँ, चलो।" वे जब मेले में पहुँचे तो उन्होंने बहुत-सी चीज़ें देखीं। डॉगी बोला, "मैं जलेबी खाऊँगा। राजू बोला, "मैं समोसा खाऊँगा" और रिया बोली, "मैं चाट खाऊँगी।" वे तीनों दुकानदार के पास पहुँचे तो बोले, "हम तीनों को चाट, समोसा और जलेबी दे दो।" उन्होंने भरपेट खाया और अपने-अपने घर लौट आए।

मेरा पन्ना

वह दिन मुझे कभी नहीं भूलता

जो दिन मैं भूल नहीं पाता हूँ वो है जब हम मेरे डॉगी मूस को घर लाए थे। वह दिन बहुत खुशी का दिन था। मूस बहुत छोटा-सा था और वह क्यूट लग रहा था। बारह-तेरह दूसरे डॉगी भी उधर थे। मूस के बाल इतने सॉफ्ट थे और इतना अच्छा लगता था उन्हें छूने में।

वह बहुत छोटा था। सिर्फ एक महीने का। वह डर-सा गया था। लेकिन जब मैंने उसे पकड़ा वह ठीक हो गया। हमने उसे चुन लिया। वह अपने दोस्तों के पास जाने की कोशिश कर रहा था। मुझे बहुत बुरा लग रहा था। मैंने मूस को उठाया और उसका हाथ वेव किया। मूस गाड़ी में आकर सो गया।

हम उसे डॉक्टर को दिखाना चाहते थे कि वह बिलकुल ठीक है या नहीं। उसे गाड़ी के ए.सी. से ठण्ड लग गई । एक-दो दिन के लिए वह घर पे चुप रहा और ज़्यादा खेला नहीं। पर फिर वह भागने लगा। यह 3 महीने पहले था और अब मूस काफी बड़ा हो गया है। अभी जब मैं यह लिख रहा हूँ वह सो रहा है। वह अब काफी चीज़ों को काटता है।

विहान सिंह
सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

चित्र: नोआ, पाँच साल, आगरा, उत्तर प्रदेश

मेरा पन्ना

हमारा खेल

फरज़ाद अली बेग
पाँचवीं
प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार स्कूल में लंच होने पर मैं अपने दोस्त के साथ खेल रहा था। खेल के मैदान में हमें एक गोल लोटा नज़र आया। हम उस लोटे के साथ खेलने लगे। पहले हम उसे गेंद की तरह उछालकर खेल रहे थे लेकिन कैच पकड़ने में उँगली में चोट लग जाती थी। इसलिए हम उसे फुटबॉल की तरह खेलने लगे। बहुत मज़ा आ रहा था।

मैंने लोटे को जैसे ही किक मारी वह उछलकर उधर जाकर गिरा जिधर मैम बैठी लंच कर रही थीं। मैम ने मुझे बुलाया। बहुत डाँटा। फिर पापा से शिकायत कर दी। कुछ देर बाद पापा अपनी दुकान से स्कूल आए। मैं बहुत डरा हुआ था। पापा ने मुझे डाँटा तो मैं रोने लगा। तब मैम पास आईं और मेरे सिर पर प्यार से हाथ रखा और मुझे समझाया कि ऐसे खेल ना खेलूँ जिससे दूसरों को परेशानी हो।

चित्र: सम्यक नितिन जीवाने, दूसरी, आनन्द निकेतन स्कूल, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

चित्र: लेनमेम उली, दूसरी, बैम्बूसा लाइब्रेरी, तेजू, अरुणाचल प्रदेश

कहाँ गए वो दिन?

कुमार विश्वजीत
पाँचवीं, सन्दलपुर, देवास
मध्य प्रदेश

पहले हम बच्चे कोई भी खेल खेलते हुए मैदान में दिख जाते थे। लेकिन अब बच्चों के मैदानी खेल की जगह टीवी और मोबाइल ने ले ली है। जहाँ बच्चे खेलते थे और जहाँ पंछी चहचहाते थे, वे मैदान अब सुनसान हो गए हैं। आजकल बच्चों ने मैदान में जाना छोड़ दिया है। जो गपशप हम मैदान में करते थे, वही हम अब व्हाट्सऐप चैटिंग के माध्यम से करते हैं।

ऐसे बहुत पुराने और परम्परागत खेल हैं जिन्हें अब बच्चे नहीं खेलते। अगर किसी मैदान पर बच्चे खेलते हुए दिखाई दे जाते हैं, तो बहुत अच्छा लगता है। पहले जब हम किसी परम्परागत प्रतियोगिता में भाग लेते थे, तो हमारे माता-पिता को हम पर बहुत गर्व होता था। परन्तु अब किसके पास यह समय है? एक समय ऐसा भी आएगा, जब बच्चों को यह भी पता नहीं होगा कि परम्परागत देशी खेल क्या होते हैं? एक बात और, जहाँ हम पहले बड़ी आसानी से मिल जाते थे, वहीं अब हम कई सालों में भी नहीं मिल पाते हैं।

1. गर्मियों के दिन थे। हवा खाने के लिए हाना बाहर घूमने निकली थी। तभी उसे अपने से कुछ दूरी पर एक शेर दिखाई दिया। पर शेर को देखकर डरने या पीछे मुड़कर भागने या किसी की मदद माँगने के बजाय हाना शेर की ओर दौड़ने लगी। हाना ने ऐसा क्यों किया होगा?

2. दी गई ग्रिड की हरेक पंक्ति और स्तम्भ में तुम्हें 1 से 6 तक की संख्याएँ भरना है। बस ध्यान रखना कि जो चौकोर आपस में जुड़े हैं उनमें एक ही संख्या आनी चाहिए।

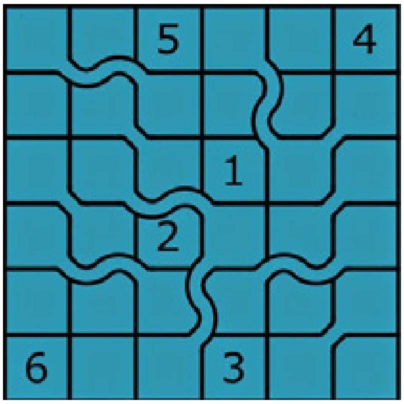

3. नोआ ओलम्पिक की फाइनल दौड़ प्रतियोगिता के अन्तिम कुछ पलों में दूसरे स्थान पर दौड़ रहे खिलाड़ी से आगे निकल गई। तो बताओ उसने दौड़ में कौन-सा स्थान प्राप्त किया?

4. दी गई ग्रिड में हाल ही में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स में विजेता रहे भारतीय खिलाड़ियों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने नाम ढूँढे?

सं	वि	ज	क	दी	त्रि	शा	जॉ	ली
के	ने	सं	दी	प	कु	मा	र	ल
त	श	र	त	क	म	ल	रा	क्ष्य
स	फो	सा	क्षी	ने	अ	रा	नी	से
र	गा	नि	क	ह	त	ज़	री	न
ग	ट	पी	मी	रा	बा	ई	चा	नू
र	न	वी	न	कु	मा	र	सु	दी
शी	पी	सिं	ए	ल्धो	स	पॉ	ल	पि
अं	नी	धू	अ	चिं	ता	शे	उ	ली

5. एक व्यक्ति नदी के एक किनारे पर खड़ा था। उसका कुत्ता नदी के दूसरे किनारे पर था। उसने कुत्ते को अपने पास बुलाया। कुत्ता किसी नाव या पुल के बिना नदी पारकर उसके पास आ गया। परन्तु ज़रा भी भीगा नहीं। यह कैसे हो सकता है?

माथापच्ची

6.

इस चित्र में एक
साँप छुपा है।
क्या तुम उसे
ढूँढ सकते हो?

फटाफट बताओ

क्या है जो छेदों से भरा
हुआ है, पर फिर भी पानी
को सोख सकता है?

(स्पंज)

वो क्या है जो हमेशा आने
वाला होता है पर कभी
आता नहीं है?

(कल)

ऐसी कौन-सी चीज़ है जिसके
आँखों के सामने आते ही
आँखें बन्द हो जाती हैं?

(तेज़ रोशनी)

डिब्बा देखा एक निराला
ना ढक्कन, ना ताला
ना है पेंदा, ना ही कोना
बन्द है उसमें चाँदी-सोना

(अंडा)

हाथ आए तो सौ-सौ काटे
थक जाए तो पत्थर चाटे

(चाकू)

7. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग बच्चा आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा बच्चा आएगा?

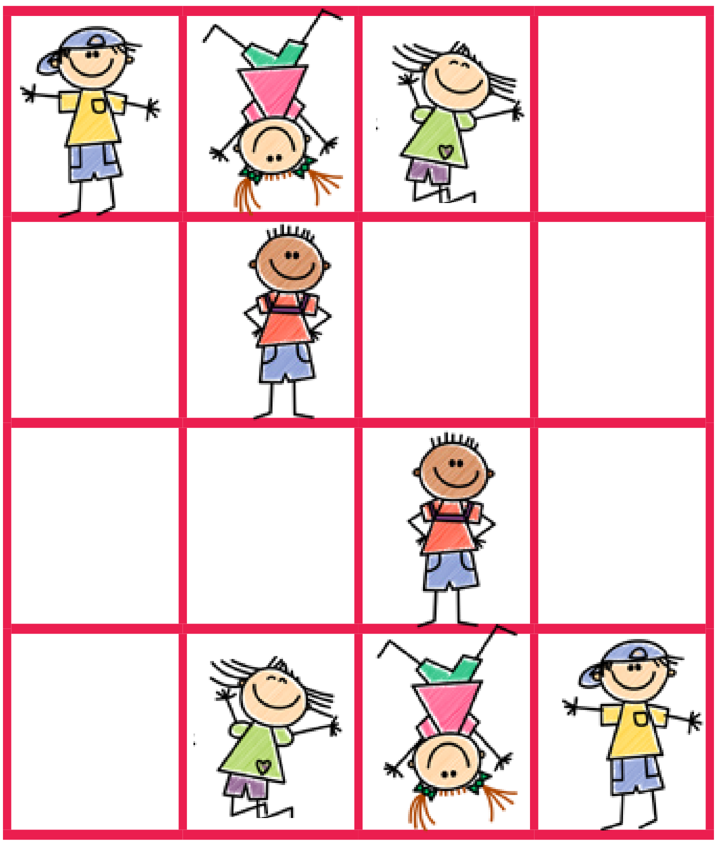

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

1			■	■	2	3		4
	■	■	5	6	■		■	
7		8	■	9	10		11	■
	■		■	12		■	13	
■	■	14	15		■	16		■
■	17			■	18	■	19	20
21		■	22	23		■	■	
	■	24			■	25		
26		■	■	27			■	■

सुडोकू 57

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

2		1		6				
4	8	6	5		2	7	3	1
9	3		4		1	2	6	8
3	9	4	6		7	1		5
1		2	3	4		8	7	6
7	6	8	1	2	5			4
6	1	7	9	3				2
		3		5		9		7
5	2				4	6	8	3

माथापच्ची जवाब

1. क्योंकि हाना चिड़ियाघर में घूम रही थी।

2.

3	1	5	2	6	4
4	6	3	5	1	2
5	4	6	1	2	3
1	5	2	4	3	6
2	3	1	6	4	5
6	2	4	3	5	1

3. नोआ ने दूसरे स्थान के खिलाड़ी को पीछे किया तो ज़ाहिर है कि उसने दूसरा स्थान ही प्राप्त किया होगा।

4.

सं	वि	ज	क	दी	त्रि	शा	जॉ	ली
के	ने	सं	दी	प	कु	मा	र	ल
त	श	र	त	क	म	ल	रा	क्ष्य
स	फो	सा	क्षी	ने	अ	रा	नी	से
र	गा	नि	क	ह	त	ज़	री	न
ग	ट	पी	मी	रा	बा	ई	चा	नू
र	न	वी	न	कु	मा	र	सु	दी
शी	पी	सिं	ए	ल्धो	स	पॉ	ल	पि
अं	नी	धू	अ	चिं	ता	शे	उ	ली

5. नदी का पानी जम गया था।

6.

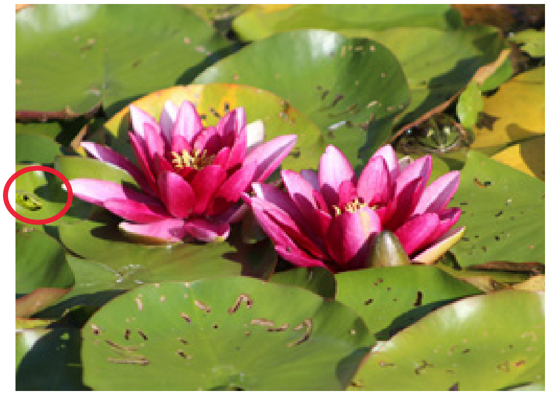

7.

अगस्त की चित्रपहेली का जवाब

1 सू	क्ष्म	2 द	र्शी			3 ग	णि	4 त
र		ड़		5 द	र्प	ण		गा
ज		6 बा	7 ज	रा		8 क	9 क	ड़ी
	10 टो		11 ब	र	12 खा		न	
	13 क	14 प	ड़ा		15 द	16 म	क	17 ल
18 प	नी	र		19 भु		ग		ह
ता		दा		20 जं	जी	र		सु
21 का	22 न		23 धा	गा		24 म	25 का	न
	26 ग	ठा	न		27 म	च्छ	र	

सुडोकू-56 का जवाब

6	3	9	7	2	4	5	1	8
8	5	1	3	6	9	2	4	7
2	7	4	1	8	5	6	3	9
9	6	3	8	7	1	4	2	5
5	2	7	4	3	6	8	9	1
1	4	8	5	9	2	3	7	6
7	9	5	6	4	3	1	8	2
3	1	2	9	5	8	7	6	4
4	8	6	2	1	7	9	5	3

तुम भी जानो

हाँ दिवस

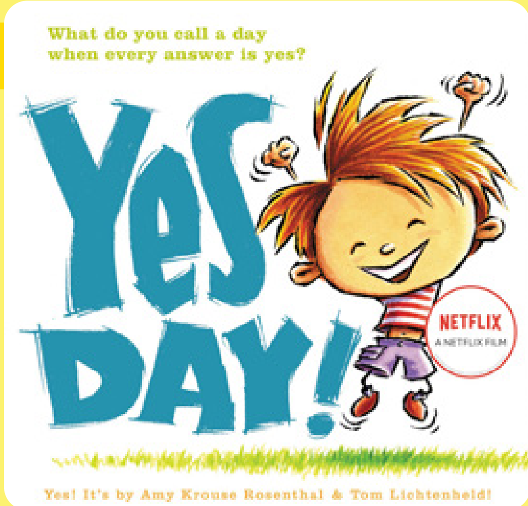

पिछले साल एक फिल्म बनी थी – *यैस डे*। उसमें आम तौर पर ना बोलने वाले माँ-बाप को एक दिन के लिए अपने बच्चों की हर बात माननी थी। वे 'ना' बोल ही नहीं सकते थे। इससे प्रेरित होकर इस साल 12 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय 'हाँ दिवस' करार दिया गया है। दुनिया भर में ऐसे कई परिवार हैं जो अब किसी भी एक दिन 'हाँ दिवस' मनाते हैं। उस दिन माँ-बाप बच्चों की हर बात मानते हैं। क्या तुम अपने परिवार में ऐसा कुछ करना चाहोगे?

थोड़ी-सी बाढ़ मगर...

हर साल वड़ोदरा की विश्वामित्र नदी का पानी बरसात के मौसम में गली-मोहल्लों में बहने लगता है। ऐसे में लोग घर से बाहर निकलने से डरते हैं। वो इसलिए कि पानी के साथ-साथ नदी के करीबन 300 रहवासी भी शहर में पहुँच जाते हैं। और वो भी घरों के दरवाज़ों तक। इस मौसम में नगर निगम के पास मगर की रोज़ लगभग 25-30 शिकायतें आती हैं। इधर मगर के आतंक से लोग परेशान हैं, और उधर मगर भी परेशान हैं। जुलाई-अगस्त के तीन हफ्तों में 15 मगर को बचाकर शहर से दूर ले जाया गया है।

रेस्तराँ में डायनासौर से मुलाकात

कुछ दिन पहले चीन के सिशुआन ज़िले में एक व्यक्ति रेस्तराँ में खाना खाने गया। वहाँ पत्थर के फर्श पर उसे कुछ निशान जैसा दिखा। उसे लगा जैसे कि वह डायनासौर के पैरों के निशान हैं। हाल ही में चीन के जीवाश्म वैज्ञानिकों ने कहा है कि वह आदमी सही था। उन्होंने बताया कि वहाँ से 10 करोड़ साल पहले दो डायनासौर गुज़रे थे और अपने पैरों के निशान छोड़ गए थे। ये जीवाश्म सौरोपॉड के थे जो पौधे खाते थे और आकार में काफी बड़े होते थे। अगली बार खाना खाने जाओ तो चौकन्ने रहना – क्या पता तुम्हें कोई नई जानकारी मिल जाए!

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

नदी गुम गई

वीरेन्द्र दुबे

चित्र: अमृता

नदी गुम गई
गुमे पहाड़
गई शेर की कहाँ दहाड़
मालूम करो
पहाड़ों से
या फिर किन्हीं
नगाड़ों से
हुआ यहाँ पर
कब, क्यों, क्या
कौन, कहाँ, कब
गया कहाँ?

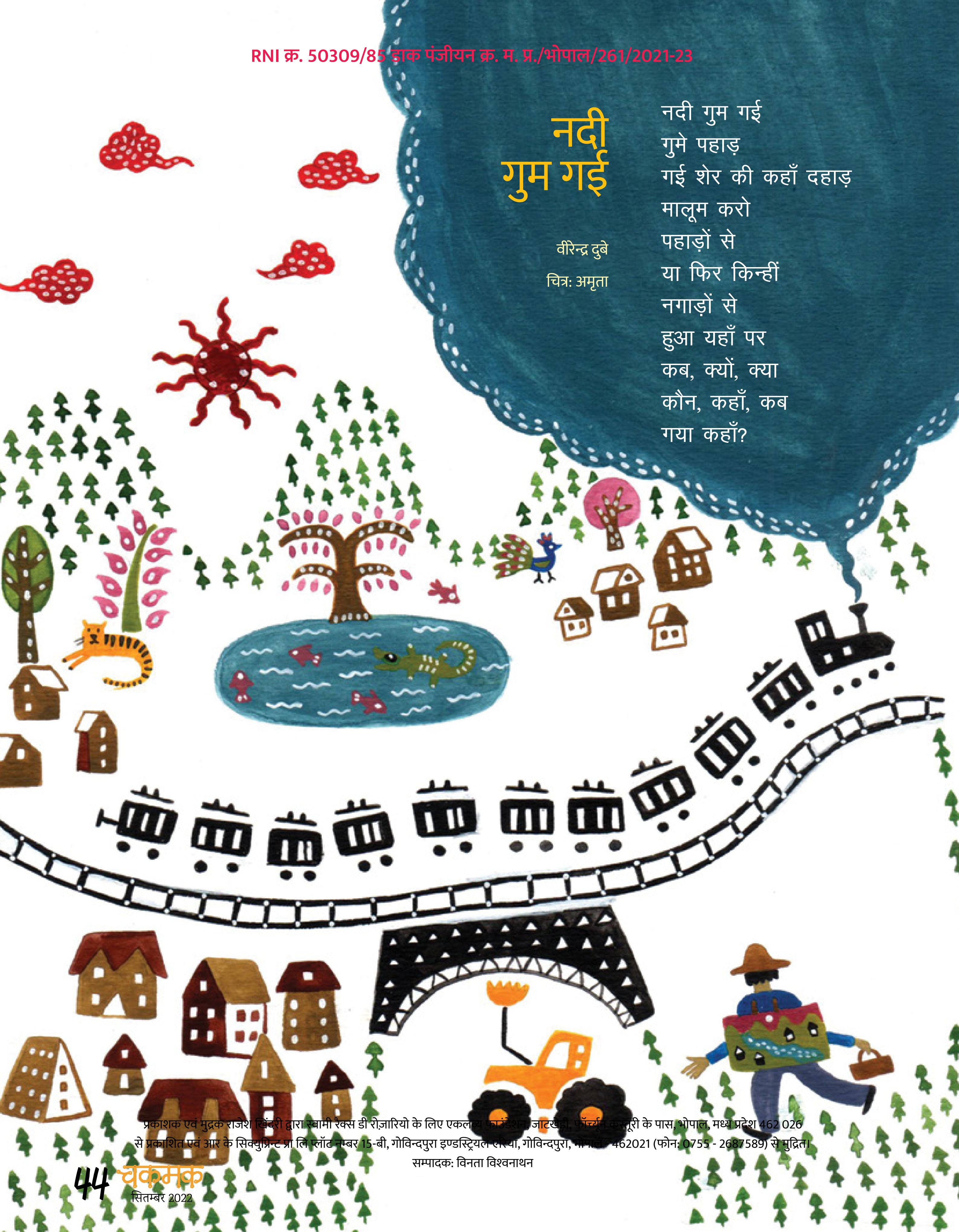

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन